**रविवार, दिनाँक 16-04-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण**

**रंगन वालिया रंगीला सोहणा रंग रंग दे, ऐसा रंग रंगीला रंगीं लोकी दंग कर दे।**

**रंग रंगाया ध्रुव प्रहलाद, दर्शन दिता ए महाराज।**

**उन्हां दे सिर ते रखया ताज, ओहो रंग रंग दे।।**

**सुदामा द्वारका विच जावे, कृष्ण चरणां दी धूरि उड़ावे।**

**वस्त्र आप बैठ पहनावे, ओहो रंग रंग दे।।**

**रंग रंगाया धन्ने जट, रघुनाथ जी आ गये झट पट।**

**होये पत्थरों प्रगट, ओहो रंग रंग दे।।**

**रंग रंगाया मीरांबाई, प्रीति चरणां विच लगाई।**

**दर्शन दिता ए रघुराई, ओहो रंग रंग दे।**

**रंग रंगाया श्री हनुमान, उन्हां नू मिल गये श्री भगवान।।**

**अपने चरणां विच बिठान, ओहो रंग रंग दे।।**

**सुग्रीव विभीषण रंग रंगाया, महाबीर जी ने उन्हां नू मन्त्र सिखाया।**

**रघुनाथ जी ने राज तिलक दिलवाया, ओहो रंग रंग दे।।**

**दासी नू ओहो रंग रंगा दे, प्रेम भक्ति अपनी सिखला दे।**

**प्रीति चरणां विच बढ़ा दे, ओहो रंग रंग दे।।**

सजनों इस भजन के अन्तर्गत इलाही रंग की महिमा का गुणगान किया गया है। इसके साथ-साथ इस भजन में युगों-युगोन्तरों में जो भी परमात्मा के श्रेष्ठ प्रेमी व भगत हुए, उनका यशोगान भी गाया गया है। यह यशोगान करते हुए सजनों सच्चेपातशाह जी

परमात्मा से प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें भी इसी इलाही रंग में रंग दो। अन्य शब्दों में इस इलाही रंग के प्रति हमारे मन में इस तरह से प्रेम जाग्रत कर दो कि वह हमारे मन को भा जाए। याद रखो जिसके मन में यह निर्मल प्रेम जाग्रत हो जाता है, वह जीवन में उसी भाव से युक्त होकर निष्कामता से आगे बढ़ता है। सजनों यह सबसे उत्तम बात है। इस भाव के अन्तर्गत न अमीरी आड़े आती है न गरीबी, न मान खलता है न अपमान अपितु तब तो समरसता होती है। तात्पर्य है कि यह समरसता यानि सुन्दर से भी अति सुन्दर स्वाभाविक स्वरूप में ढलने की शुभ बात होती है। अब जो शुभ होता है उसको अपनाना अपने भले कि लिए आवश्यक मानना होता है। इस बात के तहत् हमारे लिए बनता है कि सांसारिक इच्छाओं से मुक्त रहते हुए परम अर्थ के निमित्त जीवन जीने के योग्य बनने के लिए हम अपने मन में वैसे ही सद्भाव जाग्रत करें ताकि वे हमारे स्वाभाविक गुणों का सुदृढ़ आधार बन जाएँ। ऐसा होने पर ही हम यथार्थ रूप में श्रेष्ठ मानव होने के प्रतीक कहला सकते हैं। सो अगर हम अपनी श्रेष्ठता का विधिवत् विकास करते हुए तीनों लोकों के सामने उसका प्रदर्शन करते हुए अक्षय यश-कीर्ति को प्राप्त होना चाहते हैं तो हमारे लिए बनता है कि हम आज के इस भयावह कलुकालमय वातावरण से अप्रभावित रहते हुए अपने यथार्थ की पहचान कर आत्मोद्धार करें और फिर सुगमता से यथार्थतापूर्ण निर्भयता से जीवन जीने के योग्य बनने का पुरुषार्थ दिखाएँ। जानो ऐसा होने पर ही कई जन्मों के पश्चात जो मानव जीवन हमें किसी मकसद की पूर्ति हेतु प्राप्त हुआ है, हम उस मकसद को सिद्ध कर मृतलोक से आज़ाद हो अपने घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाएँगे यानि प्रकाश नाल प्रकाश होकर एकरूप हो जाएँगे।

इस विषय में सजनों यदि ध्यान से देखो तो हम सब एकरूप ही हैं क्योंकि परमात्मा अन्दर प्रकाशी भी है और बाहिर प्रकाशी भी है। इस तरह उसके अतिरिक्त और दूसरा कोई भी नहीं है। आशय यह है कि जो कुछ भी त्रिलोकी का खेल चल रहा है, वह उसी इलाही जोत के प्रकाश के आधार पर ही चल रहा है। वहाँ कोई भिन्न-भेद नहीं है। अब जब कहीं भिन्न-भेद ही नहीं है तो हमारे लिए बनता है कि हम एक समझदार मानव की तरह समता का भाव स्वीकारें ताकि हमारा मन हर पल शान्त अवस्था में बना रह अपनी यथार्थ अवस्था को प्राप्त रहे। इस तरह उस इलाही रंग की रंगत से यानि उस अन्दर-बाहर प्रकाशी के प्रभाव से जो ध्वनि आत्मज्ञान के रूप में उच्चरित होती है, वह हमारे रोम-रोम, रग-रग में इस तरह प्रकाशित हो उठे कि हम ''अलफ'' से लेकर ''ये'' तक की सारी बात समझ

जाएँ। जानो ऐसा होने पर फिर किसी प्रकार का कोई भी ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रहती क्योंकि हम तो उस आत्मज्ञान को अपने शरीर, ज्ञानेन्द्रियों व कर्मेन्द्रियों द्वारा प्रयोग में लाते हुए यथार्थ अवस्था में निष्पापता से जीवन जीने में सक्षम हो जाते हैं। अतः सजनों मानो कि जिसके पास सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ सिरताज के रूप में है, उसके हृदय में आत्मज्ञान रूपी ज्योति सदा प्रकाशित रहनी चाहिए। अगर इस अवस्था में खुद को साध कर नहीं रख सकते तो अज्ञानमय अवस्था को प्राप्त होकर मन-गढ़ंत स्वाभाविक रूपों को अपनाना आपकी मज़बूरी हो जाएगी। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि खुद को मज़बूर मत करो क्योंकि आपके पास सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ है जो आपको पूरे तरीके से युक्ति दे रहा है कि कैसे आपने आत्मज्ञानी बनकर अपने जीवन का मकसद सिद्ध करना है।

यह सब जानने के पश्चात अब आप पर निर्भर करता है कि **''सजन है आत्मा, श्री साजन है परमात्मा''** इस यथार्थ अनुसार अपने जीवन का हर क्षण व्यतीत करने में अपना लाभ समझते हो या फिर क्षणभंगुर वस्तुओं को सुखदायक मानकर **(चाहे वह शरीर ही क्यों न हो),** हार को प्राप्त होते हो। हम समझते हैं कि उपरोक्त बातचीत से यह तो आपको ज्ञात हो ही गया होगा कि विजय प्राप्त करने के लिए हमें उस इलाही रंग में रंग जाने की आवश्यकता है, तभी हमारा ईश्वर के श्रेष्ठ भगतों की तरह नाम रौशन हो सकता है वर्ना तो हार को प्राप्त हो जाओगे। कोई आपको पूछेगा भी नहीं और सर्वत्र निन्दा ही निन्दा होगी क्योंकि हारने वाले का तो हर शख़्श नुक्स ही निकालता है। ऐसा होने पर जीवन की पवित्रता पर मुकम्मल दाग़ लग जाता है। सो ऐसा मत होन देना। इसी सन्दर्भ में अब आगे सुनोः-

**धन रघुवर प्यारे दी गोदी दिखाई बलधारी ओए।**

**धन रघुवर प्यारा तेरी गोदी दिखाई बलधारी ओए।।**

**लगदीम प्यारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।**

**सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।**

**जेहड़ा रघुवर प्यारे दी गोदी विच आवे, जन्म अपना ओ सफल बनावे।**

**जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।**

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

अवतार धार राधिका नूं खिडायो, खेडी ए जनक दुलारी ओए।।

धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

रघुवर जी दी गोदी विच प्रहलाद जी खेडे।।

खेडे ध्रुव जगत हितकारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

रघुवर जी दी गोदी विच महाबीर जी खेडे।

खेडे लक्ष्मण ब्रह्मचारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

लक्ष्मण खेडे भरत जी वी खेडे।

खेडे शत्रुघ्न शत्रुनाश कारी ओये, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

रघुवर जी दी गोदी हिवे सब दी ओ सांझी।

खेडे सृष्टि सारी ओये, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।

जावां बलिहारी ओए, धन रघुवर प्यारे दी गोदी।

**लगदीम प्यारी ओए, सदके मैं सारी ओए धन रघुवर प्यारे दी गोदी।।**

सजनों इस कीर्तन के माध्यम से वर्तमान समयकाल में कुदरत ने कितना महान सन्देश हम कलियुगवासियों को दिया है। आशय यह है कि इस कीर्तन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी ने सब कलियुगवासियों को शत-प्रति-शत अपने जीवन का नज़रिया बदलने का आवाहन दिया ताकि वे इन्सान जीवन के यथार्थ निष्पाप मार्ग पर निर्भयता से आगे बढ़ने में सक्षमता प्राप्त कर सकें। जानो इस कीर्तन द्वारा पहला पाठ कर्त्तव्य परायणता का पढ़ाया गया है। इस सन्दर्भ में सजनों मानव होने के नाते हमारा अपने प्रति व कुल ब्रह्माण्ड के प्रति धर्म-संगत कर्त्तव्य बनता है कि हम अपने साथ-साथ सबको जागृति में लाएँ और इस प्रकार इस कर्त्तव्य को सत्यनिष्ठा से निभाने के योग्य बनने हेतु हर कलुकालवासी के मन में महान त्याग भावना जाग्रत करें। आशय यह है कि हम आप सम्भलें और मानव जाति को मनुष्यता में ढालने के प्रति सम्भालने का यत्न दिल से करें।

इस सन्दर्भ में सजनों याद रखो जहाँ कर्त्तव्यपरायणता व त्याग नहीं वहाँ इन्सान न तो जीवन के किसी भी क्षेत्र में उन्नति कर सकता है और न ही उन्नति के शिखर को छूकर उस सर्व-सांझी गोदी **(जिस पर सबका समान अधिकार है)** में पहुँच विश्राम पा सकता है यानि परमधाम पहुँच परम आनन्द का अनुभव कर सकता है। इस परिप्रेक्ष्य में युग-युगान्तरों में जितने भी सजनों के पुरुषार्थ का वर्णन आया है, वह आपके सामने ही है, इसीलिए हर कोई उनकी कर्त्तव्यपरायणता व त्याग-भावना का वर्णन करता है। निःसन्देह उनमें से किसी एक सजन का भी भौतिक जीवन आपको सुखमय प्रतीत नहीं होगा यानि सबका ही जीवन कर्त्तव्यपरायणता व त्याग से भरा हुआ था। यह है मौत से निर्भयता, यह है जगत से निर्लिप्तता और यह है जीवन मकसद को सिद्ध करने के प्रति जागृति। इस मकसद की सिद्धि में जो भी आपके आड़े आये उस सबको खुशी से स्वीकार लो क्योंकि जो सब घट रहा है, वह चाहे देखने-सुनने वालों को कैसा भी लगे पर इलाही रंग में रंगा हुआ इन्सान जानता है कि वह इस द्वारा जिस कार्य सिद्धि हेतु उसे यह जन्म मिला है, वह उसकी ओर बढ़ रहा है। अब देखने वाले तो अपने ख़्याल व दृष्टि से हर चीज़ को देखते हैं। मतलब यह है कि जिस के साथ किसी का लगाव है तो वह उसे उस दृष्टि से देखता है। जिस के प्रति किसी की नफ़रत है तो वह उसे उस दृष्टि से देखता है। किसी का व्यक्तिगत स्वार्थ या लोभ है तो सबको उस दृष्टि से देखता है और वैसा ही व्यवहार करते हुए निन्दा-उस्तत

द्वारा बात को हर जगह फैलाता है। इसके विपरीत जो निश्चयात्मक बुद्धि वाला आत्मज्ञानी इन्सान होता है वह कदाचित् किसी बात के प्रभाव में नहीं आता क्योंकि उसे अपने यथार्थ का ज्ञान होता है और यथार्थ के निमित्त ही वह अपने जीवन को आगे बढ़ा रहा होता है। लोग परेशान होते हैं कि उसके साथ क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, यह तो अच्छा इन्सान है, पर वह उस चर्चा से कभी कमज़ोर नहीं पड़ता अपितु वह तो विचार द्वारा उन चर्चा करने वालों को भी शान्त रखता है और उन्हें अपने संग लेकर चलता है। यह होता है सजनों अमरता के भाव से जीवनयापन करना। इस जीवनयापन के तरीके में कहीं भी नश्वरता का स्थान नहीं होता। इस बात को समझते हुए हम तो यही कहेंगे कि चारों तरफ जो नश्वरता फैली हुई है, उसके प्रभाव में क्यों आते हो और खुद को क्यों नश्वर मानते हो? क्यों भय के कारण नश्वरता के अज्ञानमय वातारण में उलझकर पापकर्म करने लगते हो? क्यों आत्मिक सम्बन्धों को भूलकर शारीरिक सम्बन्धों में उलझते हो? क्यों एक-दूसरे को भिन्न समझते हुए मानवता के विपरीत अजीबो-गरीब चलन में उलझते हुए, अपना जन्म बिगाड़ते हो? सजनों अपने साथ ऐसा मत होने दो क्योंकि अब बिगड़ी सँवारने का समय आ गया है और बिगड़ी बात को सँवारने के लिए सद्भाव, जिसे समभाव कहते है, अपनाना अति आवश्यक है। अतः मन में समभाव जाग्रत कर व जगत में समभाव के नीति-नियमों के अनुसार विचरते हुए परमात्मा के कर्तव्यपरायण सुपुत्र कहलाओ और इस हेतु चाहे कुछ भी त्यागना पड़े तो घबराना नहीं। जानो मानव चोले में रहते हुए यदि युग-पुरुषों ने ऐसा अदम्य साहस दिखलाया तो हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते? हमारे अन्दर भी जब वही व्यवस्था है जो उनके अन्दर थी, तो क्योंकर हम अपने आपको कमज़ोर पाते हैं? जानो कुदरत समरूप से कार्य करती है। वह ही तरह-तरह के भाण्डे घड़कर उनमें एक सा प्रकाश डालती है। तो फिर हम इस बात को जानते-समझते हुए भी क्योंकर शरीरों में उलझ कर नादान बने रहना चाहते हैं? जानो नादानी कमज़ोर कर देती है और कमज़ोरी संकल्प पैदा करती है जिसका फिर सारे लाभ उठाते हैं और हम परेशान होते हैं क्योंकि हम लुट जाते हैं। आप ही बताओ कि ऐसी व्यवस्था किसने बनाई? ऐसी मूर्खता किसने दिखाई कि दूसरे को हमारे साथ दुर्व्यवहार करने का मौका मिला? निःसन्देह खुद हमने ही यह मूर्खता दिखाई। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे के सदस्य होने के नाते सजनों ऐसे मूर्ख मत बनो अपितु मान-अपमान, अमीरी-गरीबी, बड़े-छोटे के सवाल से ऊपर उठने का साहस दिखाओ। हम देख रहे हैं कि सजन ऐसा सुनिश्चित करने में सक्षम नहीं हो पा रहे क्योंकि उनमें सहनशक्ति की कमी है। याद रखो जहाँ धीरता/सहनशक्ति नहीं होती, वहाँ वीरता नहीं होती। ऐसा इन्सान अपने कर्मक्षेत्र में कदापि सफल नहीं हो सकता

क्योंकि जरा सी झूटी-सच्ची बात लगाकर उसको कोई भी भटका सकता है। यह एक बहुत बड़ा इम्तिहान होता है। इस इम्तिहान में वही पास होता है जो झूठ-सच की चिंगारी से विचलित नहीं होता और हर परिस्थिति में धीर व वीर बना रहता है। सजनों आज इसी गुण की आवश्यकता है और सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के इसी सन्देश को अब सब तक पहुँचाना है। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि कुदरत जिस तरह खेल खेलती है, वह कलियुग के इन्सानों की समझ से बाहर है। सबके साथ यही होता है और यही होगा जो भी आगे आयेगा क्योंकि अब समय आ गया है कि जो भी आगे होगा उसे इस द्वारे के नीति-नियम अनुसार सहनशक्ति धारण करके दिखानी होगी और जैसे लिखित है - हर अवस्था/परिस्थिति में मानसिक समता यानि मान-अपमान, अमीरी-गरीबी, सुख-दुःख में सम बने रहने की सामर्थ्य दर्शानी होगी। हो सकता है कि हम आप सब सजनों का इम्तिहान लें। इस इम्तिहान में जो फेल होगा वह अपनी किस्मत बिगाड़ बैठेगा। सो खुद सम्भलकर व एक-दूसरे को सम्भालते हुए निष्काम सेवा पर रत रहो। किसी को भी ''मैं'' यानि ''कामना'' न सताए क्योंकि इस कार्य ने सामूहिक यत्न से सम्पन्न होना है। इस सामूहिक यत्न में सम्मिलित होने के लिए हर बच्चे ने आगे आना है। अब जल्दी ही कुछ ऐसा प्रबन्ध किया जाने वाला है, जिसके द्वारा हर इच्छुक सजन सतवस्तु के ग्रन्थ की हर विधि व नीति औरों को बताने के योग्य बन जाएगा। यह प्रयास जो अब आरम्भ होने वाला है उसके तहत् जो भी आगे होना चाहता है, उन सबके लिए बराबर मौका है क्योंकि इस द्वारे पर कोई भी अपना-पराया या कोई रिश्तेदारी नहीं चलती। दिमागों से ऐसा कीड़ा निकाल देना। किसी भी रिश्तेदार के प्रति आपका अन्य सजनों से अधिक झुकाव नहीं होना चाहिए और न ही उनकी मानता सबके सामने होनी चाहिए। याद रखो अपने गुणों के अनुसार जितना जो गुणी है, वह उसी का हकदार होगा क्योंकि इसमें 'तूँ-मैं' का कोई सवाल नहीं। अब सब सजन चाहे वे किसी पद पर भी कार्यरत हैं - ट्रस्टी हैं, ऑफिस वाले हैं या अन्य हैं, ध्यान से सुन लें कि हम इस बीमारी को जड़ से समाप्त करने का तरीका अपनाने जा रहे हैं और आप उसमें उलझ सकते हो व उलझकर जहाँ हो, वहाँ से खदेड़े जा सकते हो। अब हमने आपको सच्चेपातशाह जी के नियम अनुसार कर्त्तव्यपरायणता और त्याग की पूरी बात समझा दी है, आगे आपकी अपनी मर्जी है।

सजनों इस विषय में हम तो यही कहेंगे कि तन्दुरुस्त होकर आगे चलो। हर सजन के प्रति सजनता का भाव रखो। किसी के दुर्व्यवहार के आगे भी आपकी सजनता खण्डित न हो।

उस समय मानो कि अभी यह नादान है अतः अभी इसे एक और मौका दो ना कि पथ से भटका दो। सजनों यह अनीति है। इसीलिए सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि ''ज्ञानी अज्ञानी दा जोड़ नहीं बनदा'' पर फिर भी यत्न तो होता है कि ऐसा सजन मानसिक तौर पर अज्ञान से उबरकर ज्ञानमय स्थिति में आ जाए। सो हर एक को यह मौका देना बनता है। इस सन्दर्भ में अब आपको खुद अपने पर सतर्क रहना है और जैसे कहा था, हर क्षेत्र में उन्नति करके दिखानी है। इस हेतु अपने-अपने क्षेत्र में ध्यान देना है। किसी ने दूसरे के कार्य में दखल नहीं देना। अगर कुछ ऐसा है तो हम से बात करनी है न कि दूसरों को कमज़ोर करने का यत्न करना है। याद रखो यदि ऐसा किया तो परिणाम सबके सामने घोषित कर दिया जाएगा, फिर कुछ मत कहना क्योंकि समय ही ऐसा आ गया है। जैसा कि ग्रन्थ में भी कहा गया हैः-

**कैसा समय आया चतुर्भुजधारी ने।**

**सुदर्शन चक्र चलाया चतुर्भुजधारी ने।।**

तो यह समय किसी को न देखना पड़े इस हेतु सबने सावधान हो जाना है। अब इस बात को सब अपने दिमाग़ में रखते हुए दोहरा लेना ताकि कहीं गलती न हो जाए। अब आगे चलोः-

**(श्री साजन जी के मुख के शब्द)**

**श्री राम चरणों दी गोदी दा ओ कैसा है ओ राज।**

**कैसा अटल ओ राज है कैसा, कैसा अटल ओ साज।।**

**सज रिहा कैसा साज राम चरणों का कैसा सज रिहा राज।**

**श्री राम चरणों दी गोदी दा ओ कैसा है ओ राज।।**

**(श्री रामचन्द्र जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)**

**साजन जी दर्शन करो मेरा दर्शन करां मैं तेरा।**

इक रूप इको है सूरत इको है साडा चेहरा।।

(श्री साजन जी श्री रामचन्द्र जी को कह रहे हैं)

ए सीस डिगया चरणां उत्ते, सीस चरणां ते हमेशा ओ राहसी।

ए चरण अटल राज तों होये राज सदा सदा ओ राहसी।।

(श्री महाबीर जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)

असीस मेरी हो चुकी ओ साजन, ए राज सदा अटल राहसी।

राज निर्भय है युगों युगन्तर, राज सदा ओ रौशन राहसी।।

(श्री साजन जी श्री महाबीर जी को कह रहे हैं)

कैसी आप दी रहणी ओ बहणी, ख्याल आप दे कमाल।

कैसी है कीर्ति जगत ते आप दी कैसी है ओ विशाल।।

रौशनी दाते महाबीर जी दी फैल रही जगह जगह।

फैल रही ओ फैली राहसी फैली है सदा सदा।।

हनुमान जी तुम्हारे चरण इन नयनों दा है प्यार।

चरण नयनों दा आधार चरण इन नयनों दा है ओ सिंगार।।

इन नयनों पर उपकर हुआ इन नयनों दा है चमत्कार।

इन नयनों दा सीस ताज हुआ इन नयनों दा सिरजनहार।।

**(श्री महाबीर जी श्री साजन जी को कह रहे हैं)**

**सर्व दिस्सो सारी नगरी ऊपर फिर अनेक दा एक निगाह आसी।**

**आप तो हो निर्वाण दे अन्दर रूप रंग न रेखा ओ राहसी।।**

इस कीर्तन में अब हम आपको क्या बताएँ कि त्रिलोकी का सत्य कितनी सुन्दरता से सबको जना दिया गया है। इस कीर्तन में जब कहते हैंः-

**साजन जी दर्शन करो मेरा दर्शन करां मैं तेरा।**

**इक रूप इको है सूरत इको है साडा चेहरा।।**

तो यह एकता, एक-अवस्था यानि एकरूपता में आने की बात होती है। एक-अवस्था में आने पर ही जीव रूप, रंग, रेखा रहित होकर अथाह प्रकाशमय अवस्था को प्राप्त हो पाता है। विडम्बना की बात तो यह है कि सुनते-समझते हुए भी कोई विरला ही ऐसा पुरुषार्थ दिखा पाता है। उस विरले के सन्दर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ भी बार-बार कहता है कि वह विरला वही हो सकता है जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की नीतियों का सुदृढ़ता व निर्भयता से सहर्ष पालन करना सुनिश्चित कर पाता है। सो अपनी सफलता कहाँ निर्धारित है, यह हर सजन को जानना होगा और फिर अपने दिल का नाता वहीं जोड़कर, सहज ही आत्मज्ञान प्राप्त करने के योग्य बन जाना होगा। याद रखो कुदरती ग्रन्थ के अनुसार कलियुग में इस पदवी तक कोई मुश्किल ही पहुँच पाता है जो पदवी श्री साजन जी ने पाई है। सो सच्चेपातशाह जी ने यह कैसे किया, वह सारी युक्ति ग्रन्थ में खोलकर समझा दी गई है। कोई भी सजन इस युक्ति को अपनाकर लाभ उठा सकता है यानि कदम-कदम पर विचार पर खड़े होकर परमात्मा की सर्व-व्यापकता को जान सकता है। अब यह सब जानकर समुचित पुरुषार्थ दिखाना तो खुद पर ही निर्भर करता है। हम तो यही कहेंगे कि कलुकाल के प्रभाव से कुल ब्रह्माण्ड को मुक्त कराकर सतयुगी भाव-स्वभाव अपनाने के लिए प्रेरित करने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की सत्संग सभा के हर छोटे-बड़े सदस्य के लिए निष्काम भाव से अपना योगदान देना बनता है।

इस परिप्रेक्ष्य में चाहे आप भौतिक तौर पर कितने ही उलझे हुए क्यों न हों, आपके लिए इस कार्य की सिद्धि के लिए समय देना बनता है। तभी तो जितना जीवन बचा है, उसका थोड़ा-बहुत आनन्द उठा सकते हो अन्यथा तो रोते-झुखते रहोगे और अन्त परिणाम अच्छा नहीं निकलेगा। सजनों सुनो - समय कह रहा है कि खुद जागो और कुल ब्रह्माण्ड को जागृति में ले आओ क्योंकि कलुकाल हटने वाला है और सतयुग आने वाला है। इसीलिए सतयुगी संस्कृति से खुद परिचित होवो और उसका व्यावहारिक रूप जानो व सब सजनों को इससे परिचित कराओ। निःसन्देह इसके लिए कलुकाल की रीतियाँ-कुरीतियाँ छोड़नी होंगी व कुल संसार को ऐसा करने के लिए प्रेरित करना होगा। इस महान कार्य की सिद्धि हेतु आप खुद आगे बढ़ो। आशय यह है कि किसी को कहने की जरूरत न पड़े। सजनों यह संदेश जो सत्संग या घरों में बैठे हैं, या विदेश में हैं, सबके लिए है। इस तरीके को अपनाकर सजनता का पहरेवा पाओ और मृतलोक पर फतह पा लो। आप सबके पास यह एक सुनहरी मौका है क्योंकि अब शीघ्र ही ध्यानकक्ष में क्लास शुरु होने जा रही है। अब यह सन्देश केवल आप तक ही नहीं अपितु कुल दुनियाँ तक भी जाए, उसका प्रबन्ध होने जा रहा है ताकि सबके अन्दर अच्छा इन्सान बनने की चाहत पैदा हो। कुदरत सबको बराबर मौका देती है अतः इस मौके का लाभ उठाओ। इस संदर्भ में एक प्रपोजल जो बच्चों ने मिलकर इस काम को सहज व अच्छा बनाने के लिए बनाई है ताकि मकसद शत-प्रति-शत हल हो, अब उसको ध्यान से सुनो समझो। इस सन्दर्भ में यदि किसी का कोई सुझाव हो तो वह स्वतन्त्र रूप से दो-तीन दिनों के अन्दर अपना सुझाव उन्हें लिखित रूप में दे सकता है। यह काम आज-कल में ही कर लेना है क्योंकि फिर जब एक बार काम प्रारम्भ हो गया तो किसी का कोई सुझाव सुना नहीं जाएगा। अतः समय पर ही अपना काम कर लेना और बाद में कोई भी मुँह न खोलना। यह सवाल बाद में न उठे इसीलिए सबको बराबर मौका दिया जा रहा है ताकि फिर सब शान्त रहें और जिस तरह कार्य आगे बढ़े, उसे सहजता से स्वीकारें। सजनों इसी में अपनी भलाई मानना।

आप ऐसा करने में सफल हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।